Q. नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था का वर्णन कीजिए तथा इसकी असफलता के कारण बताए?

Ans: — 1807 ई० में हुई टिलसिट (Tilsit) की संधि के समय नेपोलियन अपने उत्कर्ष की चरम सीमा पर पहुँच गया था। थामसन ने लिखा है, "— टिलसिट की संधि के समय नेपोलियन का साम्राज्य न केवल अपने चरम उत्कर्ष पर था वरन अत्यन्त सुदृढ़ भी था।" लगभग सम्पूर्ण यूरोप पर इस समय तक नेपोलियन का प्रभाव कायम हो चुका था। यूरोप के प्रमुख राष्ट्रों आस्ट्रिया, प्रशा, व रूस को वह क्रमशः 1805, 1806, 1807 ई० में परास्त कर चुका था। सम्पूर्ण यूरोप के केवल इंगलैण्ड ही एक देश था जो फ्रांस को निरंतर चुनौती दे रहा था। ट्राफलगार के युद्ध के पश्चात नेपोलियन समझ चुका था कि शक्तिशाली नौ सेना के रहते इंगलैण्ड को पराजित करना संभव न था। इसी कारण नेपोलियन स्वयं कहा करता था — "बोलोन से फाल्कस्टोन तक जल सेना की तुलना में पेरिस से दिल्ली जाना सरल है।" ऐसी स्थिति में इंगलैण्ड को परास्त करना अत्यन्त कठिन हो गया था। इसी समय नेपोलियन को मॉण्टगेलार्ड ने परामर्श दिया कि इंगलैण्ड एक व्यापारिक देश था, अतः इसे आर्थिक युद्ध द्वारा परास्त किया जा सकता था। नेपोलियन ने इस परामर्श को स्वीकार किया व इंगलैण्ड पर जल मार्ग पर विजय करने के विचार को त्याग दिया। नेपोलियन ने इंगलैण्ड से आर्थिक युद्ध के लिए नवीन एवं विशाल योजना द्वारा इंगलैण्ड के आयात एवं निर्यात को बन्द करने का निश्चय किया उसकी इस योजना को इतिहास में "महाद्वीपीय योजना अथवा महाद्वीपीय विधि" कहा जाता है। नेपोलियन जानता था कि England एक व्यापारिक देश था तथा अपने यहाँ निर्मित माल को अन्य देशों को निर्यात करता था। अन्न इत्यादि खाने की वस्तुएं अन्य देशों से आयात करता था। अतः नेपोलियन का विचार था कि

यदि England के आयात - निर्यात को बंद कर दिया जाय, तो आर्थिक स्थिति को क्षति होने पर व खाने-पीने की वस्तुओं के अभाव के कारण England को घुटने टेकने के लिए विवश होना पड़ेगा। इसके लिए ही ~~यूरोप~~ नेपोलियन ~~यूरोप~~ यूरोप में ऐसी नयी व्यवस्था लागू करना चाहता था जिसका केन्द्र लन्दन न होकर पेरिस हो। फिशर के शब्दों में भी लिखा है - "महाद्वीपीय व्यवस्था England को ~~बंद~~ निर्यात को नष्ट करने की योजना थी इसका ~~से~~ उद्देश्य यूरोप में ऐसी नयी व्यवस्था को विकसित करना था जिसका मुख्य केन्द्र फ्रांस हो।"

अतः नेपोलियन ने महाद्वीपीय योजना योजना को कार्यान्वित करने के लिए निम्नलिखित आदेश जारी किए:-

(i) बर्लिन आदेश :- इसको नेपोलियन ने 21 नवम्बर 1806 ई० को घोषित किया। इस प्रकार महाद्वीपीय व्यवस्था प्रारम्भ हो गई। इस आदेश में उसने कहा कि "ब्रिटिश द्वीप समूह तथा अंग्रेजी उपनिवेशों का घेरा प्रारंभ किया जाता है। अब यदि ब्रिटिश द्वीप समूह अंग्रेजी उपनिवेशों का कोई जहाज फ्रांस अथवा उसके मित्र राष्ट्रों के किसी बन्दरगाह में प्रवेश करेगा, तो उसे जब्त कर लिया जाएगा।" इस आदेश में यह भी कहा गया था कि यूरोप का कोई भी राज्य इंग्लैंड से व्यापार नहीं करेगा। इंग्लैंड के जितने भी लोग उन देशों में हो उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाए व उनकी सम्पति जब्त कर ली जाए।

(ii) वार्सा आदेश :- 25 जनवरी, 1807 ई० को नेपोलियन ने वार्सा आदेश जारी किए। इसके द्वारा प्रशा तथा हेनोवर के समुद्र तटों पर भी अंग्रेजी व्यापार के विरुद्ध प्रतिबन्ध लगा दिया गया। टिलसिट

सन्धि के पश्चात् रूस, प्रशा तथा डेनमार्क ने भी ब्रिटिश माल का बहिष्कार कर दिया। इससे इंग्लैण्ड को अत्यधिक आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा।

इंग्लैण्ड द्वारा इन आदेशों का प्रत्युत्तर - नेपोलियन के आदेशों का जवाब देने के लिए इंग्लैण्ड ने 'आर्डर इन कौंसिल' पारित किया। इसके द्वारा घोषित किया गया कि -

(अ) यदि किसी जहाज में फ्रांस अथवा उसके उपनिवेशों का बना हुआ सामान पाया जाएगा तो उसे जब्त कर लिया जाएगा।

(ब) अपने विदेशी व्यापार को बनाए रखने के लिए अंग्रेजों ने तटस्थ राज्यों को कम करों पर सामान देना घोषित किया।

(स) कोई भी तटस्थ राज्य फ्रांस के किसी जहाज को न खरीदे।

(द) इंग्लैण्ड की ओर से व्यापार करने वाले तटस्थ देशों के जहाजों को प्रत्येक सुविधा प्रदान की जाएगी।

(य) प्रशा तथा पुर्तगाल आदि देशों द्वारा विपशता में महाद्वीपीय योजना स्वीकार की गई अतः उनके जहाजों को छोड़ दिया जाएगा।

इस प्रकार 'आर्डर इन कौंसिल' के द्वारा इंग्लैण्ड ने अपने व्यापार को सजीव बनाए रखने की चेष्टा की।

(iii) मिलान आदेश - 17 दिसम्बर, 1807 ई० को भी नेपोलियन ने मिलान आदेश जारी किए। इसके अनुसार यह घोषणा की गई कि अंग्रेजी बन्दरगाहों में उपस्थित अथवा अंग्रेजों को तलाशी देने वाले जहाजों को जब्त कर लिया जाएगा चाहे वह किसी भी देश का क्यों न हो।

इस समय इंग्लैण्ड ने भी दूसरा 'आर्डर इन कौंसिल' पारित किया। इसमें कहा गया था कि जो देश अंग्रेजी माल माल स्वीकार नहीं करेगा, इंग्लैण्ड उसका अवरोध करेगा। तटस्थ देशों से कहा गया कि वे इंग्लैण्ड के जहाजों को सुविधाएँ प्रदान कराएँ।

Date
Page

(iv) फान्टेब्ल्यू आदेश :— 18 अक्टूबर, 1810 ई. को नेपोलियन ने सबसे कठोर आदेश जारी किए, जिन्हें फान्टेब्ल्यू आदेश कहा जाता है। इन आदेशों में कहा गया कि जब्त अंग्रेजी सामान को जला दिया जाए। अवैध्य ढंग से व्यापार करने वालों के लिए कठोर दण्ड व पृथक न्यायलय की स्थापना की गयी।

उपरोक्त आदेशों का इंग्लैण्ड के अंग्रेजी व्यापार पर गहरा प्रभाव हुआ, किन्तु इसके पश्चात भी तटस्थ देशों के जहाज छिपकर अवैध्य रूप से ~~उत्तर~~ उत्तरी सागर तथा मध्य सागर के देशों में माल पहुँचा रहे थे तथा वहाँ से यह माल स्थल मार्ग से यूरोप के विभिन्न देशों में पहुँचाया जाता था। इसके अतिरिक्त, फर्जी लाइसेन्सों के द्वारा भी व्यापार किया जा रहा था। इसको रोकने के लिए नेपोलियन ने अंग्रेजी वस्तुओं पर चुंगी लगा दी। इस प्रकार अंग्रेजी व्यापार को बहुत हानि हुई।

उपरोक्त आदेश जारी करने के अतिरिक्त भी नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था को प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक प्रयास किए जिनमें प्रमुख निम्नलिखित थे —

(1) रूस के साथ समझौता - टिलसिट की सन्धि में रूस के जार के द्वारा इस योजना को स्वीकार कराने के लिए नेपोलियन ने उसे फिनलैण्ड तथा तुर्की का कुछ भाग देने का लालच दिया।

(2) आस्ट्रिया ~~का~~ पर दबाव - 28 फरवरी, 1808 ई. को नेपोलियन ने आस्ट्रिया को महाद्वीपीय योजना को स्वीकार करने के लिए विवश किया।

(3) स्पेन पर अधिकार - नेपोलियन ने स्पेन के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया था, अतः स्पेन ने स्वतः ही योजना को स्वीकारा।

(4) पुर्तगाल पर अधिकार – नेपोलियन ने पुर्तगाल से इस योजना को स्वीकार करने के लिए कहा, किन्तु पुर्तगाल का राजा राज्य छोड़कर ब्राजील भाग गया। यहीं से प्रायद्वीपीय युद्ध प्रारम्भ हुआ, जिसके घातक परिणाम हुए।

(5) पोप को बन्दी बनाना – पोप ने महाद्वीपीय योजना में भाग न लेते हुए स्वयं को तटस्थ घोषित कर दिया। अतः क्रोधित होकर नेपोलियन ने पोप पर आक्रमण किया व उसे बन्दी बना लिया। नेपोलियन द्वारा ऐसा करना उसकी एक राजनीतिक भूल थी क्योंकि इस प्रकार उसने कैथोलिकों को नाराज कर दिया।

(6) प्रशा से सन्धि :– महाद्वीपीय योजना में प्रशा को सम्मिलित करने के लिए नेपोलियन ने उससे सन्धि की।

(7) स्वीडन को पराजित :– 1808 ई. में नेपोलियन ने स्वीडन पर विजय प्राप्त करके उसे भी महाद्वीपीय योजना में शामिल किया।

(8) हॉलैण्ड का फ्रांस में विलय – हॉलैण्ड का शासक नेपोलियन का भाई लुई बोनापार्ट था, किन्तु फिर भी वह वहाँ महाद्वीपीय व्यवस्था लागू न कर सका। अतः 9 जुलाई, 1810 ई. को नेपोलियन ने हॉलैण्ड को फ्रांस में मिला दिया।

महाद्वीपीय योजना के परिणाम :–

नेपोलियन द्वारा प्रारम्भ की गयी महाद्वीपीय योजना के दूरगामी परिणाम हुए। इस नीति से हॉलैण्ड को उतनी हानि नहीं हुई जितनी कि नेपोलियन ने अपेक्षा की थी। इस योजना के निम्नलिखित परिणाम हुए :–

(I) इंग्लैण्ड से व्यापार बन्द होने से फ्रांस तथा उसके मित्र देशों में दैनिक वस्तुओं का अभाव होने लगा। इससे वे नेपोलियन के विरोधी हो गए।

(II) इस योजना को लागू करने के लिए नेपोलियन ने अनेक देशों से युद्ध किए जिससे उसके शत्रुओं की संख्या बढ़ी।

अन्ततः यही युद्ध नेपोलियन के पतन के कारण बने।

(iii) इस योजना का इंग्लैण्ड पर प्रभाव होना स्वाभाविक था। देश में अनाज्य मंहगा हो गया व अंग्रेजी वस्तुओं के दामों में भारी कमी आयी। अतः आर्थिक सन्तुलन बनाए रखने के उद्देश्य से इंग्लैण्ड की सरकार को जनता पर लगे हुए करों में वृद्धि करनी पड़ी व अन्य देशों से ऋण लेना पड़ा, किन्तु नेपोलियन ने जितना सोचा था उतना प्रभाव इस व्यवस्था का इंग्लैण्ड पर नहीं हुआ। यूरोप के साथ इंग्लैण्ड का व्यापार 1805 ई. में (महाद्वीपीय व्यवस्था लागू होने से पहले) 37.8%, 1806 ई. में 30.9% 1807 ई. में 25.5% 1808 ई. में 25.7% तथा 1809 35.3% रहा। इसी प्रकार विदेशों में जो माल इंग्लैण्ड के द्वारा बेचा गया उसकी कुल कीमत 1805 ई. में 41 लाख पौंड, 1806 ई में 44 लाख पौंड, 1807 ई. 40 लाख पौंड, 1808 में 40 लाख पौंड व 1809 में 50 लाख पौंड थी। उपरोक्त आंकड़ो से स्पष्ट है कि इस योजना का प्रभाव सर्वाधिक 1807 ई. में रहा। अन्य वर्षों में कोई प्रभाव नहीं रहा था। सम्भवतः इसी कारण क्लीफेन्स ने लिखा है: "इस व्यवस्था ने इंग्लैण्ड की समृद्धता को कम करने के स्थान पर उसमें वृद्धि की।"

(iv) इस व्यवस्था का आर्थिक प्रभाव फ्रांस पर भी पड़ा। वहाँ हजारों मजदूर बेकार हो गए। फ्रांस का मध्यवर्ग भी नेपोलियन का विरोधी हो गया।

(v) इस व्यवस्था ने भविष्य में अनेक युद्धों (प्रायद्वीपीय युद्ध इत्यादि) को जन्म दिया।

(vi) कैथोलिक जनता नेपोलियन की विरोधी हो गयी क्योंकि उसने पोप को बन्दी बनाया था।

(vii) इंग्लैण्ड ने अपने यहाँ बना माल अनेक ऐसे देशों को भेजा जो प्रत्यक्षतः उसके पक्ष में न थे। इस प्रकार

इंग्लैण्ड को अपने सम्बन्ध सुधारने का अवसर मिल गया।

(viii) टिलसिट की सन्धि के पश्चात् जो देश फ्रांस के मित्र बन गए थे वे भी इस महाद्वीपीय व्यवस्था के कारण नेपोलियन के विरुद्ध हो गए। नेपोलियन इस व्यवस्था के कारण ऐसे व्यूह-जाल में फंस गया जिससे वह कभी बाहर न निकल सका।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इस व्यवस्था के व्यापक परिणाम हुए।

महाद्वीपीय व्यवस्था की असफलता के कारण :—

नेपोलियन ने इस व्यवस्था को सफल बनाने के लिए अत्यधिक प्रयत्न किए थे, किन्तु फिर भी इस कार्य में वह सफल न हो सका। तत्कालीन परिस्थितियों के अतिरिक्त इस योजना में अनेक मूलभूत दोष थे जिनके कारण यह व्यवस्था असफल प्रमाणित हुई। इस योजना के असफलता होने के कारण निम्नलिखित थे-

(i) इंग्लैण्ड में अन्न की बहुत कमी थी। नेपोलियन को चाहिए था कि वह अन्न का आयात इंग्लैण्ड में न होने देता, किन्तु नेपोलियन ऐसा न कर सका। रोज ने लिखा है, "महाद्वीपीय योजना तभी सफल हो सकती थी जबकि नेपोलियन वहां अनाज को भेजा जाना बन्द कर देता, परन्तु नेपोलियन यह अमानवीय कार्य न कर सका और इसलिए यह योजना भी सफल न हुई।"

(ii) इंग्लैण्ड से चोरी-छिपे होने वाले व्यापार को भी नेपोलियन रोक नहीं सका।

(iii) अनेक राज्यों ने किन्हीं विवशताओं के कारण इस व्यवस्था को स्वीकार किया था, जिन्होंने अवसर मिलते ही इंग्लैण्ड से व्यापारिक सम्बन्ध पुनः कायम कर लिए।

(iv) यूरोप के राज्यों की जनता को दैनिक उपयोग की वस्तुएँ न मिल पाने के कारण जनता नेपोलियन व उसकी इस नीति का विरोध करने लगी। स्वयं फ्रांस की जनता

इस महाद्वीपीय व्यवस्था से तंग आ गयी थी।

(v) तटस्थ देश भी नेपोलियन के विरोधी हो गए क्योंकि नेपोलियन ने उन पर भी इस व्यवस्था को लागू करने का प्रयास किया।

(vi) नेपोलियन ने पोप पर आक्रमण करके उसे बन्दी बना लिया था। इससे कैथोलिक जनता नेपोलियन की विरोधी हो गयी।

(vii) स्पेन व पुर्तगाल ने इंग्लैण्ड का ही समर्थन किया।

(viii) महाद्वीपीय योजना एक अव्यवहारिक योजना थी। सम्पूर्ण यूरोप के विशाल क्षेत्र पर किसी भी एक देश के लिए नियंत्रण व निगरानी रखना सम्भव न था। इसके अतिरिक्त नेपोलियन का यह विचार कि यूरोप के लोग इंग्लैण्ड को परास्त करने के लिए अपना सब कुछ त्याग देंगे व अपार कष्ट सहन कर लेंगे, तर्कसंगत नहीं था, यह निःसन्देह नेपोलियन की एक महान भूल थी।

(ix) महाद्वीपीय व्यवस्था शक्तिशाली नौसेना के अभाव में सफल नहीं हो सकती थी। फ्रांस की नौसेना शक्तिशाली नहीं थी, अतः इस योजना का असफल होना स्वाभाविक ही था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाद्वीपीय व्यवस्था नेपोलियन बोनापार्ट की महत्वाकांक्षी योजना थी। सिद्धान्ततः यह ठीक थी किन्तु इसमें बहुत सी खामियां थीं, जिससे कारण यूरोपीय राष्ट्रों में इसके विरोध में विद्रोह होने लगे।